Subject :- Sociology Date :- 20/07/2020

Class :- 12th

Topic :- संयुक्त परिवार के विघटन के कारक/कारण

By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga

online study Material No :- 119

पहले चन्द शब्दों में पारिवारिक विघटन का अर्थ बताना आवश्यक प्रतीत होता है। पारिवारिक विघटन की अवधारणा का वर्णन विभिन्न विद्वान ने भिन्न-भिन्न अर्थो में किया है। Elliott & Merrill के अनुसार विस्तृत अर्थो में परिवारिक विघटन परिवार के कार्यो में किसी भी प्रकार के असमान्जस्य को कहा जा सकता है। इसका मतलब कि पारिवारिक असमान्जस्य या तनाव की स्थिति पारिवारिक विघटन के स्थिति का सूचक है। साथ ही Newmeyer के अनुसार पारिवारिक चेतना का समाप्त हो जाना और खरोंच या अलगाव का विकास पारिवारिक विघटन के लक्षण है।

Newmeyer के अनुसार जब परिवार के सदस्यों के बिच पूर्व स्थापित सम्बन्ध टुट जाते है तो प्रकार्यात्मक सम्बन्ध भी बिखर जाते है और सामंजस्य समाप्त हो जाता है। फलस्वरूप पारिवारिक विघटन की स्थिति उत्पन्न होती है। यह विघटन केवल पति-पत्नि के बीच तनाव की स्थिति का ही द्योतक नही है बल्कि परिवार में किन्ही भी सदस्यों के बीच उत्पन्न तनाव पारिवारिक विघटन का सूचक है। कुछ लोग पारिवारिक विघटन को पृथक कारण, परित्याग, विवाह विच्छेद, परिवार की सहायता करना और शारिरीक, हिंसा जैसी अभिव्यक्तियों के शब्द में सोचते है। अतः हम संयुक्त परिवार के विघटन की चर्चा करते है, तब ~~मनुष्य~~ मुख्य रूप से हमारा सम्बन्ध संयुक्त परिवारो के Nuclear families में परिवर्तन की प्रक्रिया से होता है। दुसरे शब्दो में आज संयुक्त परिवार तीव्रता से छोटे छोटे परिवारों मे परिवर्तित हो रहा है। उसे ही संयुक्त परिवार के विघटन कहा जा सकता है। ऐसा बिना किसी कारण के नही हो रहा है। अर्थात् संयुक्त परिवार के विघटन के निम्न कारक जिम्मेवार है जो इस प्रकार से है:-

औद्योगिकरण (Industrialization)

संयुक्त परिवारो के विघटन का प्रथम प्रमुख कारक औद्योगिकरण

माना गया है। औद्योगिकरण विभिन्न पेशों को उत्पन्न किया। पेशों ने लोग लोगों को अपनी ओर ग्रामीणों को आकृष्ट किया। गाँव से औद्योगिक

औद्योगिकरण से गाँव के वह कुटिर उद्योग धंधे भी नष्ट होने लगे जिनके द्वारा अधिकांश ग्रामीण परिवार अपनी आवश्यकता को पूरा करते थे। इसके फलस्वरूप व्यक्तियों की वे प्राचीन धारणाएँ शिथिल होने लगी जो संयुक्त परिवार व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक थी। उद्योगों में रहन-सहन तथा सामाजिक सम्पर्क के उन प्रतिबन्धों का बने रहना भी संभव नहीं था जिन्हे संयुक्त परिवार के द्वारा आवश्यक समझा जाता था। स्त्रियों को भी रोजगार के अवसर मिल जाने के कारण उन्होंने ऐसे संयुक्त परिवारों को अस्वीकार कर दिया जिनमें उनके जीवन का कोई मुल्य नहीं था। औद्योगिकरण के फलस्वरूप पैत्रानिक शिक्षा ग्रहण करने के कारण भी कुछ धीरे-धीरे संयुक्त परिवार के परम्परागत जीवन के बिल्कुल विरुद्ध हो गये। स्पष्ट है कि औद्योगिकरण विकास से वे सभी दशाएँ उत्पन्न हुई जो संयुक्त परिवारों की स्थिरता के प्रतिकूल थी।

नगरीकरण (Urbanization)

संयुक्त परिवार के विघटन के रूप में नगरीकरण भी एक कारक माना गया है। नगरों के विकास से एक नगरीय मनोवृत्ति का विकास हुआ। नगरीय मनोवृत्ति वह है जिसमें व्यक्ति परिवर्तन का स्वागत करता है, व्यक्तियों से उतना ही सम्बन्ध रखता है जिनसे उसे लाभ मिल सके, आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए सदैव स्थान परिवर्तन करता रहता है तथा उन नियमों को स्वीकार नहीं करता जिन्हे तर्क के द्वारा न समझा जा सकता हो। इसके फलस्वरूप संयुक्त परिवार एकांकी परिवार में बदलने लगे। नगरों के वातावरण भी संयुक्त परिवार की स्थिरता में बाधक सिद्ध हुआ। यहाँ व्यक्ति को प्राप्त होने वाली शिक्षा तथा भौतिक आकर्षण उसे संयुक्त परिवार के परम्परागत जीवन से दूर ले जाने लगे। इस प्रकार, संयुक्त परिवार के विघटन में नगरीकरण का भी महत्वपूर्ण भूमिका रहा है।

पश्चिमीकरण (Westernization)

Scanned with CamScanner

पश्चिमीकरण के द्वारा हम अपनी परम्पराओं तथा प्रथाओं को अपनी सफलता के मार्ग में बाधक समझने लगे। कपड़िया का कथन है कि व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक स्वतंत्रता की भावना पश्चिमीकरण का ही परिणाम है।

शिक्षा में वृद्धि

शिक्षा में वृद्धि संयुक्त परिवार के विघटन का संभवत: सर्वप्रमुख कारण भारत में शिक्षा में होने वाले वृद्धि है। संस्कृत की शिक्षा केवल उच्च जातियों के कुछ संभ्रान्त परिवारों तक ही सीमित थी। स्वतंत्रता के बाद अब हजारों स्कूलों की स्थापना हुई तब प्रत्येक जाति के सभी व्यक्तियों को एक ऐसी शिक्षा मिलनी आरंभ हुई जो समानता और न्याय के सिद्धांत पर आधारित थी। जिससे स्त्री व पुरुष अपने अधिकार व कर्तव्यों को जानने लगा। ग्रामीण संयुक्त परिवार के युवा सदस्य भी जब नगरों में जाकर नई शिक्षा ग्रहण करने लगे तो उन्होंने संयुक्त परिवार की व्यवस्था को चुनौती देना आरंभ कर दिया।

जनसंख्या में वृद्धि

जनसंख्या में वृद्धि भारत में स्वतंत्रता के बाद जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होनी आरंभ हो गई। 1947 में भारत की जनसंख्या 32 करोड़ थी, ~~13~~ वहीं आज ~~1.4~~ अरब से भी अधिक हो चुकी है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति जहाँ कृषि पर आश्रित होते हुए अपने जिविका का निर्वाह करते थे वहीं आज अन्य व्यवसायों पर भी आश्रित होना पड़ा है। जिसके कारण संयुक्त परिवार का विघटन हुआ है।

महिला जागरूकता

स्वतंत्रता से पूर्व महिला इतनी जागरूक नहीं थी कि वे अपनी माँगे माँग सके किंतु आज वे अपनी सभी माँगे माँगती है जिसका प्रभाव संयुक्त परिवार के ऊपर पड़ा है। जागरूक होने के नाते वे संयुक्त परिवार में बिल्कुल रहना पसंद नहीं करती है जिसमें उनका जीवन पूरी तरह से शोषित और उपेक्षित था। इस कारण भी संयुक्त परिवार का विघटन

Scanned with CamScanner

हुआ है।

परिवहन के साधनों की सुविधा

कुछ समय पहले भारत में विभिन्न स्थान एक-दूसरे से बहुत दूरी पर थे कि व्यक्ति को संयुक्त परिवार को छोड़कर दूसरे स्थानों पर जाना एक सरल कार्य नहीं था। 20वीं शताब्दी के अंतिम से जब देश के सभी स्थानों को सड़क व रेलमार्गों से आपस में जोड़ने से व्यक्ति के सामने स्थान परिवर्तन की यह समस्या समाप्त हो गई। ग्रामीण प्रतिदिन गाँव से बाहर जाकर शाम को पुनः अपने गाँव वापस लौट आना आसान हो गया। इससे एक ओर व्यक्ति की निर्भरता को कम तो दूसरी तरफ गाँव या नगर से बाहर के पर्यावरण से परिचितकरण भी कारण भी संयुक्त परिवार के विघटन के कारण बनी।

परिवार के कार्यों में कमी

कुछ समय पहले तक संयुक्त परिवार व्यक्तित्व के विकास, सामाजिक सुरक्षा, मनोरंजन तथा आर्थिक जीवन में व्यक्ति के लिए इतने महत्वपूर्ण कार्य करते थे कि व्यक्ति संयुक्त परिवार में रहना अधिक पसंद समझता था। किंतु आज सामाजिक सुरक्षा का कार्य राज्य ने ले लिया है, क्लब तथा विभिन्न व्यावसायिक संगठन मनोरंजन देने का कार्य करते हैं, व्यक्तित्व के विकास का कार्य शिक्षण संस्थाओं को हस्तांतरित हो गया है एवं आर्थिक जीवन में सफल होने के लिए संस्थागत प्रशिक्षण को आवश्यक समझा जाने लगा है। इस प्रकार संयुक्त परिवारों की उपयोगिता में कमी हो जाने से इनका विघटन होने लगा है।

संयुक्त परिवार का विघटित पर्यावरण

किसी भी विवेकशील व्यक्ति के लिए ऐसे परिवारों में रहना कठिन हो गया है जो सदस्यों के आंतरिक द्वेष, स्त्रियों के बीच पारस्परिक कलह, बच्चों को लेकर होने वाले झगड़े, रूढ़िगत व्यवस्था की प्रधानता तथा कर्ता की स्वेच्छाचारिता। ये सभी से व्यक्ति बाहर निकलकर एकाकी परिवारों को अधिक अच्छा समझने लगा। स्पष्ट है कि ये सभी दशाएँ संयुक्त परिवार की स्थिरता के प्रतिकूल सिद्ध हुई।

S. N. Choudhary
Marwari College
L.N.M.U

Scanned with CamScanner